Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 13, (2018) 45-48

संस्कृत कवि डॉ अशोक कुमार डबराल के 'देवतात्मा हिमालय महाकाव्य' के वर्ण्य विषय का प्रतिपादन

ललिता

संस्कृत विभाग पौड़ी परिसर हे0न0ब0ग0वि0वि0 उत्तराखण्ड

*Corresponding Author Email: lalitarawat429@gmail.com

Received: 04.06.2018; Revised: 05.08.2018; Accepted: 11.09.2018.
©Society for Himalayan Action Research and Development

Abstract: प्रस्तुत शोधपत्र में देवतात्मा हिमालय महाकाव्य के वर्ण्य विषय का प्रतिपादन किया गया हैं। संस्कृत साहित्य में काव्य की अनेक विधाएँ विद्यमान है। इन विधाओं मे महाकाव्य का वही स्थान है जो माला में मध्यमणी का हुआ करता है। संस्कृत के सम्पूर्ण वाडमय पर दृष्टिपात करने से तथा नवीनतम शोध निष्कर्षो से स्पष्ट होता है कि संस्कृत के इतिहास मे महाकाव्य के बीज सर्वत्र दुष्टिगोचर होते है। इस यथार्थ के बावजूद भी हमारे सम्मुख सर्वाधिक प्राचीन काव्य रामायण भी उपलब्ध होता है। रामायण को तथा उसके उत्तरवर्ती काल मे लिखे गये महाभारत को सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का उपजीव्य माना जाता है। इन्ही दोनो ऐतिहासिक रचनाओं को आधार बनाकर संस्कृत मे सहस्त्रों काव्यों की रचना की गई।

Keywords: अशोक कुमार डबराल, देवतात्मा, महाकाव्य, वर्ण्य विषय

काव्य का उदभव तथा उसका व्यापक विकास होने के पश्चात् काव्य की समालोचना का एक युग भी प्रारम्भ हुआ और इस युग में काव्य स्वरूप की जो वृहद् व्याख्या की गयी उसके निष्कर्ष रूप मे ही यही कहना उपयुक्त होगा की वस्तुतः किसी भी काव्य मे किसी चरित्र विशेष का सर्वांगीण विस्तृत व व्यापक वर्णन पाया जाता है। इसमें आकार की सुनिश्चितता भी निर्धारित की गयी है। काव्य समालोचना युग के सभी समीक्षक आचार्यो ने काव्य की जो मीमांसा की उसके अनुसार काव्य एक अलौकिक सुख को प्रदान करने वाली वस्तु होती है। यह दुःख प्रदान होने पर भी पाठको को सुखानुभूति कराती है यही इसकी विशिष्टता भी है। लेकातिरेक विषयों को सामाजिकों के सम्मुख सरस रूप मे उपन्यस्त करना किसी काव्य की सफलता मानी जाती है। इस दुष्टिकोण से संस्कृत साहित्य मे मिलने वाले समस्त काव्य भेदो मे काव्य को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इसी वैशिष्टय के कारण वैदिक काल से लेकर 21वीं शताब्दी के इस अत्याधुनिक वैज्ञानिक युग मे भी काव्य साधक महाकाव्यों की रचना में संलग्न है।

काव्य के जिस रूप ने शताब्दियों से बौद्धिक समाज के साथ–साथ सामान्य जन मानस को भी अपनी ओर सदैव आकृष्ठ किया है उसका विकास होना स्वाभाविक था। समाज जिस वस्तु की अधिक अपेक्षा करता है उसका दिन प्रतिदिन उत्तमोत्तम रूप मे विकसित होना एक नैसंर्गिक होने के साथ–साथ नितांत व्यावहारिक भी है। इसी शाश्वत सत्य के फलस्वरूप वैदिक काल मे बीज रूप उपलब्ध होने वाले तथा रामायण व महाभारत काल में प्रथम प्रत्यक्ष रूप मे प्राप्त होने वाले महाकाव्य मे परवर्ती युग मे इतना व्यापक स्वरूप धारण किया कि उसकी गणना मे ही अनेक शोध किये जा सकते है।

आदि कवि वाल्मीकि तथा व्यास के अनन्तर अश्वघोष, कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, बाणभट्ट परवर्ती कवियों ने महाकाव्य की इस यात्रा को ऐसे आयाम तक पहुँचाया जहां विश्व की किसी भी भाषा साहित्य उसके समीप किसी भी मायने मे नही ठहरता है।

संस्कृत के इन कवियों ने अपने अमर कृतियों में जिन–जिन विषयों को चित्रित किया है वे भी मानव जीवन से अत्याधिक सम्बद्ध रहे है। उससे अतिरिक्त उन विषयों की उपयोगिता भी प्रत्येक काल मे मानव मात्र

के लिए श्रेयश्कर है। इसी विशेषता के कारण हजारो वर्ष पूर्व लिखी गयी इन रचनाओ की विषयवस्तु आज के इस वैज्ञानिक युग मे भी सम्पूर्ण मानव समाज के लिए अत्यधिक उपयोगी है। इन कतिपय विषयों मे हिमालय एक ऐसा विषय है जिसका महत्व समाज के लिए सृष्टि के आरम्भ से लेकर प्रलय पर्यन्त तक सुस्पष्ट है।

हिमालय का वर्णन वैदिक साहित्य मे पर्याप्त मात्रा मे मिलता है। संस्कृत वाडमय के प्रारम्भिक साहित्य मे भी उसे पर्याप्त स्थान दिया गया है। इसी क्रम मे कालिदास आदि कवियों ने तो प्रमुखतः अपनी कृत्तियों मे हिमालय का चित्रण किया। हिमालय ऐश्वर्यवान होने के कारण महेश्वर है, समस्त मे व्याप्त होने के कारण विष्णु है, और जगद्धात्री इस वसुन्धरा का धाता भी है। हिमालय की इसी महिमा को हृदयागम करते हुए जहां कुछ कवियों ने उसे अपने काव्यों मे आंशिक रूप मे चित्रित किया है वहीं कतिपय कवियों ने हिमालय को ही अपने काव्य का मुख्य विषय बनाया है। ऐसे कवियों मे उत्तराखण्ड के गढ़वाल जनपद मे जन्मे अशोक डबराल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होनें हिमालय को अपने काव्य का मुख्य आधार बनाकर ''देवतात्मा हिमालय'' नाम का महाकाव्य लिखा।

देवतात्मा हिमालय के प्रारम्भ में हिमालय की गरिमा का वैदिक एवं पौराणिक प्रमाणों के साथ कवि ने व्यापक वर्णन किया है। काव्य के नामकरण से ही विदित होता है कि काव्य में देवतात्मा हिमालय के महत्व को व्यापकता दी है। वस्तुतः यह काव्य किसी अन्य का उल्लेख ही नही करता अपितु एक मात्र मानव की आन्तरिक विविध भावनाओं के द्वारा हिमालय की गौरवगाथा को प्रतिबिम्बित करता है।

11 सर्गो मे विभक्त काव्य मे 211 श्लोक मात्र है, जो कलेवर की दृष्टि से लघुतम होता हुआ साहित्यिक दृष्टि से नवीनता का द्योतक है। इसके लेखक डा॰ अशोक कुमार डबराल है और हिन्दी अनुवादक श्रीमती सुशीला 'पन्नी' है, जो कवि की विदुषी धर्मपत्नी है।

महाकाव्य का कथानक–

काव्य ग्यारह सर्गो मे विभक्त होते हुए भी छोटे–छोटे स्वरूपो मे विषय की गरिमा को व्यक्त करता है। नवां सर्ग सबसे छोटा मात्र 8 पद्यो का है और बड़ा आठवां सर्ग 34 श्लोकों का है। सर्गो को क्रमशः भावना, प्रेरणा, वेदना, विचारणा, कल्पना, करूणा, चेतना, कीर्तना, रोचना, पर्यावरण कारणा और कामना की भावना से विभक्त किया है।

प्रथम सर्गवद्ध कथानक का स्वरूप–सर्ग–

'भावना' से सम्बन्धित इस सर्ग का प्रारम्भ भावना से पूछ रहे है कवि कि तुम कौन हो? क्या दमित मन मे उमड़ने वाली उत्कट अभिलाषा, या विषयी जन के मन की अभिलाषा या स्त्रियों के हृदय की हर्षोल्लास की लहर अथवा मन मे छुपी हुई रोमांच भावना हो, या पथिको के हृदय की लालसा हो। भावना को योग सिद्धि की इच्छा, गुरू की गर्जना भी कहा गया है। वस्तुतः इच्छाओं की पूर्ति करने वाली प्रेम की भावना, वैराग्य भावना भविष्य की योजना हो, क्या मन की सुकोमलता भावना हो? भावना के विविध स्वरूपों का चित्रण है। भावना को दुष्टों के दोषों का पोषक एवं गुणवानों के गुणों की प्राण–प्रदा भूमि भी कहा है। अन्त मे हिमालय की स्तुति एवं उसका गुणवान का आहवान है। ऐसी भावना को कवि अपने हृदय मे निवास करने का आहवान करते है। इस सर्ग मे 29 श्लोक है।

द्वितीय सर्ग–

''प्रेरणा'' हिमालय एवं पार्वती द्वारा प्रेषित पवन ने कवि से देववाणी मे कविता करने की प्रेरणा दी। जिसमें पिता विद्यादत्त और पितामह सदानन्द, प्रपितामह दामोदर की कीर्तिलता को आगे बढ़ाने का संकेत है। हिमालय के पवन ने कहा है कवि तुम हिमालय की गरिमा का वर्णन करों। हिमालय से गुणग्राही कवि रचना करने की प्रेरणा लेते है। द्वितीय सर्ग मे 12 श्लोक है।

तृतीय सर्ग–

''वन्दना'' विविध नामों से सुशोभित दुर्गा जी का वन्दन करता हुआ कवि, शिवजी की वन्दना करते है। देवतात्मा हिमालय की शिवाज्ञा को प्रणाम करते हुए हिमालय के प्रति अपनी अटूट आस्था व्यक्त करते है कवि, क्योंकि कवि का घर और मन महोत्सव भी हिमालय है। हिमालयस्थ प्रकृति के विविध स्वरूप से मंगल और अनुकूल की कामना है कवि

अपने माता–पिता का स्मरण करते है। काव्य–रचना की सूचना पूर्वजों को देकर, उनसे कवि तृप्ति की कामना करते है। इस सर्ग मे 17 श्लोक है।

चतुर्थ सर्ग–

''विचारणा'' मे हिमालय को देवताओ का देवता कहा है जो ऐसा नही मानते, वे तो अन्ध विश्वास मे डूबे है। वास्तव मे हिमालय ही वास्तविक शिवालय है। प्रलयकाल मे तो ''देवतात्मा हिमालय'' ही शेष रह जायेगा। अतिपुण्य कर्मो के फलस्वरूप स्वर्ग की प्राप्ति तो हो जाती है, किन्तु पुण्यक्षीण होने पर फिर यही आना पड़ता है, किन्तु भूलोक का स्वर्ग हिमालय का आनन्द तो बन्धु–बन्धुवों के साथ यही लिया जा सकता है। हिमालय मे यदि हिम नही होता, तो न नदियां, न प्रयाग, न योग, न यज्ञ, न तीर्थयात्री, न कथाएँ, न यह भारत भूमि शस्य–श्यामला, सुजला होती, हिम पर्वत तो मत्स्याकार है। मेरी उस देवतात्मा हिमालय की गौरवगाथा का वर्णन करने में कल्पना कैसे समर्थ हो सकती है। इस सर्ग मे 20 श्लोक है।

पंचम सर्ग–

''कल्पना'' हिमालय के अद्भुत सौन्दर्य के कारण शिव ने वहां अपना निवास बनाया। विविध उपमानों से हिमालय के सौन्दर्य का वर्णन है। भारतवर्ष श्रेष्ठ, पूज्य और ज्ञानगुरू है मानो हिमालय को इसलिये भारत वर्ष मे स्थापित किया है हिमालय तो ताप भंजक है। महाकवि कालिदास धन्य है, जिसने हिमालय का पृथिवी का मानदण्ड से सम्मानित किया। हिमालय के उपर स्थित बालचन्द्रमां की प्रतीति बालसूर्यवत् हो रही है। आश्चर्य है हिमालय करूणामय हो गया है। इस सर्ग में 21 श्लोक है।

षष्ठ सर्ग–

''करूणा''– गुणवान् हिमालय ने गरिमा के कारण मौनव्रत धारण कर लिया है। इन्द्र से क्षत–विक्षत होने पर भी शान्त है। हिमालय का दर्शन ही जीवन की सफलता है। विकृत वेष में शिव स्वरूप को देखकर मानों झरनों के बहाने रो रहा हो। हिमालय को नंग और जड़ कहना, उसकी कीर्ति को दूषित करना है, वह तो ऐसा नही है। हिमालय की करूणा का मापन वर्षाकालीन बादलों की ठंडी–ठंडी बूंदो मे किया जा सकता है। शिव का लिंगात्मक स्वरूप ही हिमालय है। इसमें 19 श्लोक है।

सप्तम सर्ग–

''चेतना''– पर्वतराज के पक्षी भी ग्रीष्मकालीन फलो के पकने की सूचना देने मे सक्षम है। पृथिवी और पर्वतों के परस्पर विवाद मे ये एक–दूसरे के आधार और अधेय बन गये है। वर्षा ऋतु के सफेद और काले बादल मानों हिमालय की दाढ़ी है। प्रातःकालीन सूर्य की श्क्त किरणों से आवृत्त शिखरों की बर्फ ने हिमालय की जटा का रूप धारण कर लिया है। हिमालय की शोभा का वर्णन करते हुए कवि का कथन है कि सायंकालीन सूर्य की किरणों के कारण मानो हिमालय रक्त चन्दन का टीका लगाकर तपस्वी बन गया है। भगीरथ की गंगा ने तो मात्र सागर–पुत्रों का उद्धार किया, किन्तु हिमालय से निःसृत गंगा तो सबका कल्याण करती है। हिमालय के कारण ही बादल वर्षा कर पाते है। इस सर्ग मे 24 श्लोक है।

अष्ठम् सर्ग–

''कीर्तना''– हिमालय की स्थिरता को उसकी गम्भीरता को माना जाता रहा है। वैदिक विराट पुरूष की कल्पना, सम्भवतः ऋषियों द्वारा हिमालय की कोटिशः घाटियों और पादपप्रदेशों के अवलोकन से की होगी। हिम–निर्मित शिला ब्रह्मा की मानों संसार को देखने का आसन है। शिव तो मुक्तिदाता है, ये मुक्ति जिज्ञासुओ की प्रतीक्षा मे है। हिमालय की अप्रतिम–स्वरूपता के कारण शिवजी ने वहां अपना शिवालय बनाया हुआ है। कामदेव के भस्म होने के कारण मानों प्रतिशोध की भावना से वहां रति और वसन्त रहते है। हिमालयस्थ पर्वतीय नारियां अपने गुणों के कारण, पूज्य है उनका जीवन सादगी का प्रतीक है। पाण्डवों ने हिमालय मे ही मुक्ति पाई। सन्यासियों का मुक्ति–स्थल कैलाश ही है। यह सर्ग 34 श्लोको का है।

नवम् सर्ग–

''रोचना'' – भारतवर्ष की सेवा मे हिमालय ही सर्वविध नर–नारियों का योगदान प्रेरणा का प्रतीक है। श्रीकृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत धारण किया, श्रीकृष्ण को पृथ्वी ने धारण किया और पृथ्वी को हिमालय ने धारण किया। वे अच्युत–अच्युत नही हुए, सम्भवतया हिमालय ही अच्युत हुआ। हिमालय ही सबका धारक एवं सहायक है। फिर भी लोक कृष्ण को प्रणाम करते है, हिमालय को नही। नवम् सर्ग 8 श्लोकों का है।

दशम सर्ग–

''पर्यावरण–कारणा'' पर्वतीयों के पाले गए पेड़ काट दिये। हिमालय के सारे वनबान्धय प्राणिगण मारे गये। जंगली प्राणियों का वंश मिटाया जा रहा है। वनों के अंधाधुन्ध दोहन से हिमालय लूट लिया है। वन बिना जल सम्भव नही और जल के बिना जीवन नही। वनाग्नि से हिमालय नग्न हो गया है। पर्वतरोहियों से पर्यावरण दूषित हो रहा है। हिमालय पर्वत की वर्तमान दशा से कवि का मन दुःखी है। पर्यावरण की रक्षा करना हम सब का कर्तव्य है। इस सर्ग मे 15 श्लोक है।

एकादश सर्ग–

''कामना''– की जा रही है, कि पार्वती ने जैसे सुदर्शन पति ''शिव'' को प्राप्त किया, उसी तरह अविवाहित पुत्रियाँ सुन्दर पति प्राप्त कर सुखी रहें। स्वामी कार्तिकेय और गणेश जी समस्त बच्चों की रक्षा करे। शिव–पार्वती की तरह गृहस्थी सन्तति नियमन कर सुखी रहें। हिमालय मे पहुँचकर मुमुक्षु मुक्ति को प्राप्त करे। अनाचारी राष्ट्र निष्कासित हों। हिमालय अजर–अमर रहकर हमारी रक्षा करे। कवि का कथन है कि मेरा काव्य, जो हिमालय पर लिखा गया है, सबके लिए कल्याणकारी एवं मोक्षदायक हो। यह सर्वविध सहायक बनें। हिमालय मे स्थित नृत्य–मग्न नंदा शिव संसार की रक्षा करे। इसमें 14 श्लोक है।

उपसंहार– कवि ने ''देवतात्मा हिमालय'' प्रबन्ध काव्यरसिकों एवं देशभक्तों के मन में सदा निवास करें ऐसी कामना की है।

सन्दर्भ सूची –

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास । 20-40 पेज न0
2. कुमार सम्भव । 10-20 पेज न0
3. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य प्रथम सर्ग के श्लोक। 52-65 पेज न0
4. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य द्वितीय सर्ग के श्लोक। 66-79 पेज न0
5. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य तृतीय सर्ग के श्लोक। 72-80 पेज न0
6. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य चतुर्थ सर्ग के श्लोक। 21-90 पेज न0
7. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य पंचम सर्ग के श्लोक। 91-101 पेज न0
8. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य षष्ठम सर्ग के श्लोक। 102-110 पेज न0
9. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य सप्तम सर्ग के श्लोक। 111-122 पेज न0
10. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य अष्ठम सर्ग के श्लोक। 123-139 पेज न0
11. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य नवम सर्ग के श्लोक। 140-143 पेज न0
12. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य दशम सर्ग के श्लोक। 144-151 पेज न0
13. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य एकादश सर्ग के श्लोक। 152-158 पेज न0

****